International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 10, October - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.101 |

आजाद हिन्द फौज का संगठनात्मक स्वरूप

डॉ०अ खलेश्वर कुमार

शोध छात्र, राजनीति वज्ञान वभाग , ल लत नारायण म थला वश्व वधालय , दरभंगा (बिहार)

सुभाष चन्द्र बोस ने इंटर की परीक्षा 1915 में सम्मान सहित उतीर्ण क और बी.ए.आनर्स में दर्शनशास्त्र वषय लेकर प्र वष्ट हुए | आगमी वर्ष के प्रारम्भ में ही एक घटना ऐसी घटी क उन्हें का लज से निलम्बित कर दिया गया | एक अंग्रेज प्राध्यापक जिसका नाम ई.एफ.ओटन था भारतीय वधा र्थयो के साथ सदैव असभ्यता का व्यवहार करता था | वधा र्थयो के प्रतिनि ध के रूप में सुभाष चन्द्र बोस ने प्रधानाचार्य से इसकी शकायत की इस प्रकार कुछ समय के लए ववाद शांत हो गया | परन्तु फर एक बार प्रोफेसर ने एक वधार्थी के साथ हाथपाई की | वधा र्थयो ने बदले में का लज की सीढियों पर आक्रमण कर दिया | सुभास चन्द्र बोस आक्रमणकरियो में नही थे | वे केवल दूर के दृष्ट थे परंतु फर भी उनको संस्था से निष्का सत कर दिया गया और उन्हें कटक में अपने माता- पता के पास घर लौटना पड़ा | इस घटना ने सुभाष चन्द्र बोस के मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डाला और इसी से उन्होंने शहादत का प्रथम पाठ पढ़ा | उनके अ भभावकों ने उनकी स्थिति को समझकर सहानुभूति प्रकट की यह बात उनके लए आश्चर्य क थी | का लज के हठात अनुपस्थित के समय उन्होंने अपने को आध्यात्मिक एवं सामाजिक कार्यो में लगाया |

अगले वर्ष कलकता वश्व वधालय के वास्त वक एकमात्र शासक आशुतोष मुखर्जी के हस्तक्षेप से उन्हें स्कॉटिश चर्च का लज में प्रवेश मल गया | इस प्रकार वे कलकता आकर पुन: अध्ययन में लगे गये | पुन: प्रवेश की प्रतीक्षा के दौरान सुभाष चन्द्र बोस ने 49वी बंगाली रेजिमेंट में भर्ती होने का प्रयास कया परन्तु दृष्टी में दोष होने के कारण उन्हें अस्वीकृत कर दिया गया |

का लज में प्रवेश लेने के पश्चात् सुभाष चन्द्र बोस ने वश्व वधालय के भारतीय सुरक्षा दल (प्रादे शक सेना)में अपना नाम अं कत कराया और फोर्ट व लयम के समीप प्र क्षक्षण श वर में

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 10, October - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.101 |

सम्मि लत हुए | उन्होंने खाकी वर्दी पहनी और उत्साह के साथ बंदूक चलाने का अभ्यास कया तथा सैनिक जीवन का खूब आनंद लया | फार्ट व लयम में अपनी रायफल उठाते समय गर्व से उनकी छाती फुल गयी | भारतीय होने के कारण वे फ़ोर्ट व लयम में प्रवेश नहीं पा सकते थे परन्तु सैनिक के नाते वे वहाँ प्रवेश पा गये |

उन्होंने 1919 में दर्शनशास्त्र के साथ बी.ए.आनर्स क परीक्षा प्रथम श्रेणी में उतीर्ण क और एम.ए. में मनो वज्ञान वषय में प्रवेश में भाग लेंगे ? उन दिनों आई.सी.एस. नौकरी सर्वोतम मानी जाति थी और प्रत्येक भारतीय युवक क इंग्लैंड जाकर इस परीक्षा में सम्मि लत होने क तीव्र इच्छा रहती थी परन्तु सुभाष चन्द्र बोश इंग्लैंड जाकर इस परीक्षा में सम्मि लत होने के इच्छुक नहीं थे क्यो क इसमे उतीर्ण होकर वे आई. सी. एस. अ धकारी के रूप में अंग्रेजी सरकार को सहयोग नहीं देना चाहते थे | उनका मन तो इसके वपरीत अन्य कार्यो में रमा था | अन्तोगत्वा उन्होंने इस वचार से क इंग्लैंड में आठ मास के प्रवास से वे आई.सी.एस. क परीक्षा उतीर्ण नहीं कर पायेगे उन्होंने इंग्लैंड जाने क सहमती दे दी |

9 सतम्बर 1919 को उन्होंने इंग्लैंड के लए समुद्री जहाज द्वारा प्रस्थान कया और पांच सप्ताह क यात्रा के पश्चात वहाँ पहुंचे गये | उन्होंने कैंब्रिज वश्व वधालय में प्रवेश लया | इसी बीच सुभाष चन्द्र बोस ने अभी भारतीय समुद्र तट छोरा भी न था क अमृतसर के ज लयांवाला बाग में अनेक स्त्री, पुरुषों एवं बच्चो क निमर्म हत्या कर दी गयी | पंजाब में माशर्ल लॉ लगा दिया और समाचारों पर पाबन्दी लगा दी गयी | लाहौर एव अमृतसर में भयप्रद घटनाओ क अस्पष्ट अफवाहों फैला गयी | परन्तु सुभाष चन्द्र बोस निश्चातता की स्ति थ में इंग्लैंड रवाना हुए थे |

कैब्रिज में आई.सी.एस.परीक्षा की तैयारी अंग्रेजी निबंध ,संस्कृत ,दर्शनशास्त्र ,अंग्रेजी कानून ,राजनीती वज्ञान आधुनिक यूरोपीय इतिहास ,अंगेजी इतिहास ,अर्थशास्त्र एवं भूगोल वषयों पर लैक्चरो द्वारा करायी जाती थी | वहाँ के वधा र्थयों के स्वतंत्र वातावरण एवं सामान्य रूप से वधा र्थयों के प्रति आदरपूर्ण दृष्टीकोण ने सुभाष चन्द्र बोस को प्रभ वत कया |यहाँ का वातावरण कलकता के पु लस आक्रांत वातावरण से सर्वथा भन्न था | कलकता में प्रत्येक

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 10, October - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.101 |

वधार्थी पर राजनैतिक क्रांतिकारी होने का संदेश कया जाता था | सुभाष चन्द्र बोस आई.सी.एस. की परीक्षा क तैयारी के लए केवल आठ मास का समय मला था इस लए उन्हें सफलता की आशा थी |परन्तु उनको स्वंय आश्चर्य हुआ जब वे इस परीक्षा में न केवल सफल ही घो षत हुए ब लक समस्त वधा र्थयों में चतुर्थ स्थान भी प्राप्त कया |

सुभाष 16 जुलाई 1921 को बम्बई पहुचे और वहाँ महात्मा गांधी से उनके लेबरनम सड़क पर स्थित निवास पर मले | उस समय उनकी आयु केवल 23 वर्ष थी | युवक सुभाष चन्द्रबोस जो सार्वजनिक जीवन में पदापर्ण कर रहे थे , उस नेता से मलकर अंतरंग बात करना चाहते थे जिसने संपूर्ण देश में अंग्रेजी सरकार से असहयोग करने का आन्दोलन आरम्भ कर रखा था | उनके मन में तीन प्रश्न थे | उन्ही का उतर वे गांधीजी से ज्ञात करना चाहते थे | कांग्रेस द्वारा संचा लत व भन्न कार्यक्रमों से कैसे आशा क जा सकती थी क उनके परिणामस्वरूप करों क आदायगी बंद हो जायेगी अथवा सरकार क अवज्ञा करने से उसे भारत छोड़कर चले जाने के लए कैसे बाध्य कया जा सकता था ? गाँधीजी एक ही वर्ष क अव ध में स्वराज दिलाने का कस प्रकार वचन दे सकते थे ?अपनी स्वाभ वक शांतिपूर्ण मुद्रा में गांघीजी ने सुभाष के प्रश्नों का उतर दिया | सुभाष चन्द्र बोस पहले प्रश्न के उतर से संतुष्ट हुए परन्तु अन्य दो प्रश्नों के उतर उन्हें संतुष्ट न कर सके | तथा प उन्होंने गांघीजी के कलकता पहुचकर देशबंधू चतरंजन दास से मलने के सुझाव को स्वीकार कया |

कलकता पहुंचकर सुभाष चन्द्र बोस ने शीघ्र ही चतरंजन दास से मलने का अवसर प्राप्त कया | अभी उनकी बातचीत समाप्त भी नहीं हुई थी क उन्होंने निश्चय कर लया क उन्हें उनका नेता मल गया है जिसका उन्हें अनुकरण करना है | उन्होंने कलकते में रहकर ही देश में व्याप्त स्थिति का ज्ञान प्राप्त कया | समस्त देश में उत्साह क लहर से गांघी के तिन सूत्री कार्यक्रम को पर्याप्त सफलता मलने क संभावना प्रतीत होती थी | इनमे वदेशी वस्त्रो का त्याग, वधानसभा और अदालतों एवं शक्षा संस्थाओ का बहिस्कार शा मल था | उदारवादी अलग रहे और क्रांतिकारी गांघीजी के अहिंसावादी सद्धांत से असहमत थे |अपने आन्दोलन में गांघीजी को समस्त देश क जनता का सहयोग तो मला परन्तु फर भी सता के साथ देशव्यापी स्तर

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 10, October - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.101 |

का कोई संघर्ष नही हुआ | कांग्रेस तुरंत शाही दौरे के वरोध में देश व्यापी आंदोलन संगठन करने में जुट गयी | सुभाष इस युद्ध में कूद पड़े और इस वरोध का नेतुत्व करने लगे अंग्रेजी अ धकारी इस आंदोलन से घबरा गये और उन्होंने चतरंजन दान और सुभाष चन्द्र बोस सहित उनके सा थयों को 10 दिसंबर 1921 क संध्या समय पकड कर जेल भेज दिया | सुभाष के लए जेल जाने का यह प्रथम अवसर था | उनके प्रथम बार बंदी बनते ही उनके द्वारा संपादित बंगाल का लज के प्राचार्य पद का कार्य ,बंगाल प्रांतीय कांग्रेस स मति के प्रचार अ धकारी का कार्य एवं राष्ट्रिय वा लयंटर कोर का कार्य समाप्त हो गये |

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 10, October - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.101 |

संदर्भ सूची :

1. डेलरिंपल व लयम ,(2007),द लास्ट मुगल :द फौज ऑफ ए डायेनेस्टी संपादकीय हिदुस्तान " सर्फ चमत्कार नही भारत क तरक्क"|

2. ले.कुसुम नायर,(1946)'आई.एन.ए.'पदमा पबिल्केशन इलाहबाद

3. 'हेराल्ड्स ऑफ फ्रीडम' प्रकाशन वभाग भारत साकार नई दिल्ली

4. डॉ० एस. के. बोस, (1970)'फंडामेंटल क्वास्चन्स ऑफ इन्डियन रिवोल्यूशन'(नेताजी रिसर्च ब्यूरो ,कलकता)

5. त्यागी, रू च,(2006),"भारतीय शासन और राजनीति" मयूर पेचर बैंक, नई दिल्ली*पृ 33-34*

6. पायली,एम.वी.जैन ,डॉ० युवराज और फ डया, (1998) "भारतीय शासन और राजनीति, साहित्य भवन पब्लिकेशन ,आगरा पृ 19-20

7. वही ,पृ

8. दत.आर.पी.इण्डिया टुडे में वर्जित सेंट्रल ,बैजिग इंक्वारी कमेटी ,1929

9. कृपालकी ,आचार्य गांधी ,पृ 292-293

10. चंद्र, व पन ,(1995),भारत का स्वतंत्रता संग्राम हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली वश्व वधालय पृ० स० -115-116